AUTHOR PROFILE

DRISHTI BHATIA
M.A. English, B.Ed

Drishti, an ardent teacher with a passion for her profession and love for her students. She worked as a teacher in different schools (Mathura and Pinjore). She is having 8 years of experience in teaching. Currently she is working at JHCS Shamirpet from July 2019 to till now.

Her experience with JHCS continues to be thrills and exciting stuff on a daily basis. Watching childrens growing into loving responsible adults, who work hard for their future and this is the key for her motivation and fundamental reason why she enjoy's teaching. Apart from teaching she has a passion for reading stories, listening music and loves to interact with new people.

© JGI Schools 2019

Story 38

मेहनत का महत्त्व

एक बार की बात है - शहर में दो भाई अपनी माँ के साथ रहते थे। बड़ा भाई मोहन बहुत कामचोर था जबकि छोटा भाई सोहन मेहनती था। माँ हमेशा बड़े भाई को समझाती थी कि आगे बढ़ने के लिए सभी को कुछ न कुछ मेहनत से काम करना चाहिए पर वह कभी नहीं सुनता था। उसके इसी व्यवहार के चलते छोटा भाई अपनी माँ को लेकर अलग जाकर रहने लगा क्योंकि मोहन हमेशा सोहन को यही कहता रहता था कि हमारे भाग्य में जब तक खाना, रहना लिखा है तो मेहनत करके क्या मिलेगा। जब बड़ा भाई अकेले रहने लगा तो उसे लगा अब कोई उसको रोकने टोकने वाला नहीं है,वो अपनी जिंदगी आराम से जी पायेगा क्योंकि उसको लगता था कि उसका भाग्य अच्छा होने से उसको खाने को मिलता रहेगा।

दिन बीतते गए। छोटे भाई ने कारोबार में बहुत मेहनत की व तरक्की हासिल की। उसकी माँ उसकी सफलता से बहुत खुश थी। वह अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी माँ को व अपने अच्छे कर्म व मेहनत को देता था तथा किसी पर आश्रित नहीं रहता था। इधर बड़े भाई की स्थिति बहुत ख़राब हो गयी। कुछ समय तो जमा किया हुए अनाज से उसका काम चलता रहा पर एक समय आया जब उसके पास अन्न का दाना भी नहीं रहा। हारकर वह एक मंदिर के आगे भीख मांगना शुरू कर देता है। एक दिन छोटा भाई माँ के साथ उसी मंदिर में गया। वहां वह मोहन को देखकर आश्चर्य चकित हो गया।

उसकी इस दशा पर उसको दया आयी और वह उसको अपने साथ घर ले आया। छोटे भाई की सफलता ,अच्छा घर सब देखकर बड़ा भाई बहुत आश्चर्यचकित भी हुआ व खुश हुआ। उसको अपने किये पर पछतावा हो रहा था। वह अपनी माँ व भाई से क्षमा माँगता है। तब उसकी माँ उसको समझाती है कि हमें कभी किसी पर आश्रित नहीं होना चाहिए। अगर हम अच्छे कर्म करेंगे तभी हमारा भाग्य भी हमारा साथ देगा। वक्त कब खराब हो पता नहीं चलता। इसलिए हमें अपने समय पर सारे काम करने चाहिए। जब मेहनत का समय है तब मेहनत करो। आज हमारे द्वारा की गई मेहनत कल हमारे ही काम आएगी। बड़ा भाई माँ को धन्यवाद देता है व वादा करता है कि वो भी ईमानदारी के साथ कड़ी मेहनत करके एक अच्छा और सफल इन्सान बनेगा। सब बहुत खुश होते हैं तथा फिर से एक दूसरे के साथ मिलकर खुशी खुशी जीवन व्यतीत करते हैं।

<u>शिक्षा</u> - "हमें अपना काम समय पर करना चाहिए व दूसरों पर निर्भर नहीं होना चाहिए। मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती। मुश्किल वक्त में उनकी मेहनत ही रंग लाती है"

© JGI Schools 2019

Story 39

संपत्ति का बंटवारा

एक गाँव में दो भाई थे। उनके माता -पिता के मृत्यु के बाद उन्हें पैतृक संपत्ति प्राप्त हुई थी। वे बहुत गरीब थे जिस कारण उन्हें सिर्फ एक गाय ,एक नारियल का पेड़ और एक कंबल मिला था। दोनों भाइयों में बड़ा भाई बहुत चालक था और छोटा भाई भोला-भला। बड़े भाई ने संपत्ति की बंटवारा किया। उसने कहा कि "भाई तुम तो छोटे हो तुम ऊपर नहीं चढ़ सकते हो इसलिए तुम पेड़ का निचला भाग तुम लेलो।गाय के पिछले भाग बहुत गंदा होता है इसलिए तुम गाय का सामने वाला भाग लेलो और कंबल तुम सारा दिन रख लो सिर्फ रात को मुझे देदो।" यह बात सुन कर छोटे भाई बहुत खुश हुआ और यह सोचने लगा कि मेरे भैया को मुझ पर कितना प्यार है। रोज वह गाय को चारा खिलता था ,गाय को नहलाता था ,पेड़ को पानी देता था और कंबल सुबह धूप में सूखाता था। हर रोज बड़ा भाई गाय का दूध दुह कर उसे बेच कर पैसा कमाता था। गाय के गोबर से कंडे बनाकर उसे भी बेचकर कमाता था। नारियल का पेड़ से नारियल तोड़ कर उसे भी बाजार में बेचकर पैसा कमाता था। रात को आराम से कंबल ओढ़ कर सोता था। बेचारा छोटा भाई बहुत खटता था मगर उसके पास खाने को भी नही रहता था इतना ही नहीं बेचारा रात को जाड़े में काँपते हुए ठीक से सो भी नहीं सकता था। गाँव वालों के द्वारा छोटे भाई का कष्ट देखा नहीं गया उन्हें बहुत दुःख हुआ।

गाँव के बड़े बुजर्ग छोटे भाई श्यामू को कुछ सिखाये थे। दूसरे दिन जब बड़ा भाई रामू गाय के दूध धूने गया तो गाय के सामने भाग पर छोटा भाई ने डंडे से मारने लगा और गाय ने लात मार ने लगी और दूध नीचे गिर गया बड़ा भाई को चोट आयी। बड़ा भाई ने पेड़ पर चढ़ा तुरंत छोटा भाई पेड़ के निचले भाग को काटने लगा बड़े भाई घबरा कर पेड़ से नीचे उतर गया।तब रात को सोने गया तो देखा कंबल भींगा था। गुस्से से बड़ा भाई छोटे भाई से पूछा यह क्या होगया तुझे सुबह से देख रहा हूँ ,छोटे भाई ने कहा माफ कीजिये मैं सिर्फ अपने हिस्से का संपत्ति पर ही हाथ लगाया आपके भाग पर कुछ हाथ नहीं लगाया। यह सुनकर बड़े भाई को अपनी गलती का एहसास हुआ और कहा "छोटू मुझे माफ करदो, मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया था। अब हम दोनों मिलजुल कर रहेंगे दोनों संपत्ति को बराबर बांटेगे। इसतरह दोनों भाई मिलजुल कर रहने लगे और खुश थे।

नीति : "एकता में ही सुख है। "

© JGI Schools 2019

AUTHOR PROFILE

Ms. JYOTI ARORA
PRIMARY TEACHER

ज्योति अरोड़ा को पढ़ाने कीरूचि के लिए जाना जाता है। उन्होंने अपनी डिग्री कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से प्राप्त की। उन्हें अपने विषय के प्रति गहरा ज्ञान और लगन है। वह दयालु, नर्म और मिलनसार है। उन्हें कहानी कहने और कहानी लेखन में गहरी रुचि है।

© JGI Schools 2019

बदलाव ही जीवन है।

जीवन हमेशा एक-सा नहीं रहता, समय के साथ है बदलता
इंसान घर है बदलता, रिश्ते है बदलता
दोस्त है बदलता , फिर भी है परेशान रहता
क्योंकि वह खुद को नही बदलता
परिवर्तन को स्वीकार कर जीवन को सुखमय बनाओ
जीवन में खुशियों की लहर जगाओ

जीवन में कुछ भी निश्चित नहीं है केवल एक चीज है और वह है परिवर्तन - जो की निश्चित है। दार्शनिक अरस्तू ने कहा है, परिवर्तन प्रकृति का नियम है। हम प्रकृति के इस नियम को जब भी मानने से इनकार करने लगते हैं, तब हम दुखी हो जाते हैं, मुश्किलों से घिर जाते हैं। हमें स्वीकारना होगा कि जब अच्छे दिन स्थायी नहीं रहते, तो बुरे दिन भी नहीं रहेंगे। जो व्यक्ति इस सत्य को जान लेता है, वह कभी निराश-हताश नहीं होता और उसका कर्मशील जीवन मजबूत होकर सामने आता है। हमें पता है कि हमारे शरीर में भी बदलाव होते हैं और हम अपने शरीर को तंदुरूस्त रखने के लिए क्या करते हैं - हम पौष्टिक आहार खाते हैं जैसे फल, हरी सब्जियाँ, दूध और मेवे आदि लेकिन सिर्फ हमारे शरीर को तंदुरूस्त रखने से हम मजबूत नहीं बन जाते हैं । शरीर की तंदुरूस्ती के साथ - साथ हमारा मन भी मजबूत और तंदुरूस्त होना चाहिए और हमारे मन के लिए पौष्टिक आहार क्या है **विश्वास** । जीवन में यदि बदलाव चाहते हो तो सबसे पहले खुद पर विश्वास रखकर अपने जीवन मे सकारात्मक बदलाव लाने की कोशीश में जुट जाओ । जीवन का यह नजरिया हमें हर लक्ष्य को पाने के लिए हिम्मत देता है । फिर हमारे अपनों पर भी विश्वास मम्मी - पापा पर भाई-बहनों पर टीचर्स पर विश्वास होने से हमारे रिश्तों को ताकत मिलती है और सबसे जरूरी हमारा भगवान पर विश्वास जो हमें हर परिस्थिति से निकलने की ताकत देते हैं क्योंकि भगवान तो हर समय हमारे साथ होते हैं।हमारे समय में जब लाइट चली जाती थी तो मोमबत्ती जलाते थे या लालटेन जलाते थे । उसको जलाते ही अंधेरा एकदम रोशनी में बदल जाता था । विश्वास भी हमारे जीवन में एक मोमबत्ती की तरह ही होता है । मुश्किलों की स्थिति में विश्वास का जैनरेटर मुश्किलों को दूर करने का रास्ता दिखता है और आगे बढ़ने की हिम्मत देता है। माईकल जार्डन को क्या आप जानते हो माईकल जार्डन का अपने स्कूल की बास्केट बाल में चुनाव नहीं हुआ, इस बात को लेकर वे बहुत रोए, उन्होंने दुखी मन से अपने आप को कमरे में बंद कर लिया और बहुत रोए, पर फिर भी उन्हें अपने ऊपर

© JGI Schools 2019

बहुत विश्वास था, उन्होंने सोचा की इस छोटी सी हार पर मैं नहीं रोऊंगा क्योंकि मुझे अभी बहुत आगे जाना है अपने मन के इसी बदलाव से इतनी मेहनत की कि आगे जाकर उनका चुनाव अमेरिका की टीम में हो गया और आज वो रिटायर्ड प्रोफेशनल अमेरिकन बास्केट बालॅ खिलाड़ी हैं |

इस वास्तविक घटना को पढ़कर भूलना नहीं है अपितु जीवन मे इसे अपनाना है। हम समय की ऐसी रेलगाड़ी के साथ-साथ चल रहे हैं, जिसमें रुकने का मतलब पिछड़ जाना होता है। जीवन के सफर का वास्तविक आनंद हम तभी उठा सकते हैं, जब हम समय के साथ चलें, पुराने स्टेशनों (जड़ रीति-रिवाजों और पुरानी अवधारणाओं) को छोड़ते जाएं और नए स्टेशनों (समय के अनुकूल नवीनता) को अपनाते जाएं। समय के साथ किसी भी वस्तु, विषय और विचार में भिन्नता आती है। मौसम बदलते हैं। मनुष्य की स्थितियां बदलती हैं। अगर हम यह चाहते हैं कि हमारे जीवन में अच्छा ही घटित होता रहे और बुरा कुछ भी न हो, तो यह अच्छा भी हमें बुरा लगने लगेगा। जीवन में दुख और सुख दोनों ही आते हैं। यदि हम हमेशा मीठा ही खाते रहें, तो उससे ऊब जाएंगे। लेकिन यदि नमकीन खाने के बाद मीठा खाएंगे, तो वह ज्यादा स्वादिष्ट लगेगा। इसलिए जीवन में आए परिवर्तनों को स्वीकारें और जीवन के स्वाद का पूरा आनंद लें।

© JGI Schools 2019

AUTHOR PROFILE

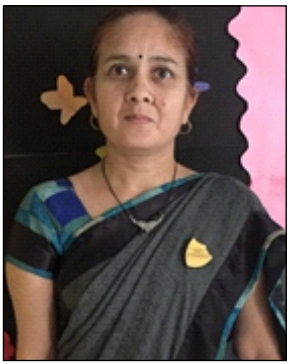

Ms.VARSHA CHITLANGIYA
HINDI HOD

Varsha Chitlangiya is well known for her passion for teaching. She went ahead for her masters and attained her degree from Devi Ahelaya University, Indore. She has a deep knowledge and passion for her subject matter. She is kind, warm and friendly. She has a keen interest in poem writing, storytelling and story writing.

© JGI Schools 2019

Story 41

कर्म का महत्व

एक दिन एक नदी की धारा बहुत दूर से आती हुई थक गई थी। उसने अपनी सहेली से बोला - " मैं तो चलते -चलते अपने जीवन से ऊब गई हूँ। विश्राम करना चाहती हूँ पर एक क्षण को भी विश्राम नहीं, ऐसा भी जीवन किस काम का ! अब तो आगे बढ़ने का मेरा इरादा नहीं है । देखो आम की यह सघन कुंजें कितनी शीतलता प्रदान करने वाली हैं। मैं तो इन्हीं के नीचे विश्राम करुँगी । " और वह वहीं रुक गई। घनी छाया के निचले स्थान को जल से भरने लगी । दूसरी धारा अर्थात उसकी सहेली आगे बढ़ती गई पर जाते- जाते कह गई- " तू इस बात को क्यों भूलती है कि अपने जल की पावन , स्वच्छता बहते रहने में है और यदि तेरे जीवन में काम से जी चुराने ने स्थान बना लिया तो स्वाभाविक गुणों से भी हाथ धो बैठेगी। " पहली धारा ने अपनी सहधारा की बात को अनसुना कर दिया , उसकी बात पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया । उसने एक सरोवर का रूप धारण कर लिया। थोड़े दिनों बाद पानी के गिरे रहने के कारण ऊपर काई की मोटी परत जम गई । पानी इतना गंदा तथा दुर्गंध युक्त हो गया कि गांव वासियों ने उसमें अपने पशुओं को पानी पिलाना तथा कपड़े धोने धोना तक बंद कर दिया। दूसरी धारा जो आगे बढ़ती गई , कठिनाइयों का सामना करते हुए , वह अपने लक्ष्य तक पहुंच गई।

शिक्षा - जीवन में कार्य करते हुए आगे बढ़ने की आदत बनी रहनी चाहिए , तभी हमारी पवित्रता व स्वच्छता बनी रहती है।

© JGI Schools 2019

AUTHOR PROFILE

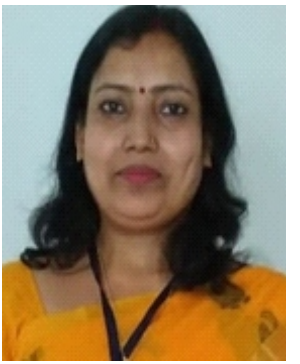

Ms. KANCHAN

श्रीमतीकंचनचौधरीजीनेवीरकुँवरसिंहविश्वविद्यालयसेविज्ञानमेंस्नातको त्तरकियाहै।उन्हेंहिन्दीसाहित्यपढ़नेमेंबहुतरूचिहै।उन्हेंहिन्दीकहानियाँऔर कविताएँलिखनेऔरबच्चोंकोसुनानेकाबहुतशौकहै।वहआठवर्षोंसेशिक्षिकाके रूपमेंकार्यरतहै।वहबच्चोंकेप्रतिप्रेमवस्नेहकीभावनारखतीहै।

Story 42

आत्मविश्वास

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन क विश्वास रगों में साहस भरताहै,
चढ़कर गिरना,गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत, बेकर नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

एक नन्हीं चींटी बार-बार फिसलने के बावजूद भी ऊँची दीवार पर इस विश्वास के साथ चढ़ती है, कि उसे मंजिल मिल जाएगी। बार- बार गिरने पर भी वह कोशिश करना नहीं छोड़ती है। इसी प्रकार एक छोटी चिड़िया दूर-दूर से तिनका चुनकर लाती है और अपना नीड़ बनाती है। बिना इस बात के डरे कि तेज़ हवा या तूफ़ान उसके घोंसले को उड़ा ले जाएगा। प्रकृति में यह छोटे- छोटे जीव बिना डर के आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। हम तो मनुष्य है, हमारे पास विवेक का बल है। मानव के पास किसी भी मंज़िल को प्राप्त करने की क्षमता है। बस हमें जरूरत है अपने अंदर आत्मविश्वास जगाने की और परिश्रम एवं लगन द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की।

"आत्मविश्वास का आशय है स्वयं पर विश्वास और नियंत्रण" कोई व्यक्ति कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो आत्मविश्वास के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकता। आत्मविश्वास ही सफलता की नींव है। आत्मविश्वास उसी व्यक्ति के पास होता है जो स्वयं से संतुष्ट होता है एवं जिसके पास दृढ़ निश्चय, मेहनत व लगन, साहस, वचनबद्धता आदि संस्कारों की सम्पति होती है। इस दुनिया में कुछ भी पाना आसान नहीं है। जीवन में सफलता पाने के लिए हमें कड़ी मेहनत करनी होती है। याद रहे आप अपने भाग्य के निर्माता है आप जो कुछ बल या सहायता चाहते हो, वह सब आपके अंदर विद्यमानहै। जो अपने कदमों की काबिलियत पर विश्वास रखते है वो ही मंजिल तक पहुँचते है ।अतः स्वयं पर विश्वास रखे, खुश रहे,साकारात्मक सोच, परिश्रम, लगन एवं आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़े ।

उठो जागो और तब तक मत रूको,
जब तक की लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।

© JGI Schools 2019

AUTHOR PROFILE

S. A. LAXMI RAO
M.A, B.Ed

Profession: Hindi Faculty
Jain Heritage A Cambridge School, Nagpur
Publications: Articles/ Poems published in leading newspapers & magazines

© JGI Schools 2019

Story 43

दीपावली

एक घर में पाँच दोस्त रहते थे |बडे मिलनसार व एक दूसरे पर जान छिडकने वाले | दिवाली की धूम चारों ओर थी |उन्होंने इस त्यौहार को सार्थक बनाना चाहा |उन पाँचों ने ,पाँच दिये अपनी अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करते हुये जलाये|

पहले दोस्त ने उत्साह का दिया जलाया ,दूसरे ने शांति का दिया जलाया ,तीसरे व चौथे दोस्त ने हिम्मत व समृध्दि का दिया जलाया ,पर ये सारे दिये थोडी थोडी देर जल कर बुझ गये |किंतु पाँचवे दोस्त का दिया निरतंर जलता रहा |बुझा नहीं |जानते हैं ,वह कौनसा दिया था ?वह न बुझने वाला अनोखा दिया ,उम्मीद का दिया था |यह उम्मीद का एक ही दिया काफी है ,उन बुझे हुये दियों को जलाने के लिये |

जीवन चाहे जैसा हो ,हमें उम्मीद कभी नही छोडनी चाहिये |एक उम्मीद के दिये से जीवन के बुझे हुये सारे दिये हम पुनः जला सकते हैं |अतः अपने घर ,अपने मन को सदा उम्मीदों से भरा रखिये ,क्योंकि यह उम्मीद ही हमारे जीवन का पूँजी है |इसीलिये कहते हैं उम्मीदों पर दुनिया कायम है |

अपने जीवन के हर उतार चढ़ाव में उम्मीद के दिये को यू जलाये रखिये कि आपके जीवन का हर दिन दिवाली बन जाए।

© JGI Schools 2019

Story 44

मन का विश्वास

रामायण का एक बड़ा ही प्रसिद्ध प्रसंग है जो हमें बचपन में हमारी दादी अक्सर सुनाया करती थी।

हर बार इस प्रसंग को सुनना हमें बड़ा रोमांचित करता था और इस प्रसंग से हमने कई बार अलग-अलग अर्थों में समझा।

प्रसंग इस प्रकार है जब श्री रामचंद्र लंका पर चढ़ाई करने के लिए रामेश्वरम के तट पर बैठे हुए थे व चिंतित है थे कि इतनी बड़ी वानर सेना को इस विशाल समुद्र के उस पार कैसे ले जाया जाए?सेतु का निर्माण किस प्रकार किया जाए? इस पर किसी ने उन्हें सुझाया कि श्री रामचंद्र के नाम में है इतनी महत्ता है कि केवल उनका नाम ही लिख-लिख कर भी यदि हम पत्थरों को पानी में डालेंगे तो स्वयं ही तैरने लगेंगे। फिर क्या था? नल नील ने हर एक पत्थर पर श्री राम लिखना शुरु कर दिया और वानरों ने एक-एक करके पत्थरों को पानी में फेंकना शुरू कर दिया। देखते ही देखते सारे पत्थर तैरने लगे और एक सेतु बनने लगा ।

श्री रामचंद्र जी ने इतने बड़े-बड़े पत्थरों को पानी में यूं तैरता देखा तो उन से रहा नहीं गया। उन्होंने सोचा क्या सच में मेरा नाम लिखने से पत्थर तैर जाएंगे क्या वास्तव में मुझ में इतनी शक्ति है और इस सोच के साथ उन्होंने एक छोटा सा पत्थर कर उठाकर पानी में फेंक दिया। फिर क्या था वह कंकर डूब गया । यह देख श्री रामचंद्र बड़े लज्जित हुए और मन ही मन सोचने लगे कि स्वयं मेरे हाथ से डाला हुआ कंकड़ तो डूब गया फिर इतने बड़े-बड़े पत्थर यह कैसे तैयार रहे हैं?

उनके परम भक्त श्री हनुमान जी, नैनो के कोर से ये सब देख रहे थे और जैसे ही उन्होंने अपने प्रभु को लज्जित होते देखा तो तुरंत उनके पास आए और कहने लगे "प्रभु आप क्यों शर्मिंदा होते है? जिसे संसार में आपने त्याग दिया भला उसे कौन बचा सकता है उसे तो डूबना ही था। "

यह प्रसंग मुझे हमेशा से ही बहुत प्रेरित करता था और आज मैं इसका शायद सही अर्थ समझ पाई हूं। सवाल यह नहीं था कि उस पत्थर पर श्री राम लिखा था या नहीं लिखा था? सवाल तो यह भी नहीं था कि क्या मात्र श्रीराम लिखने से पत्थरों पानी पर तैरने लगेगे? सवाल तो यह है कि जहां इतने बड़े-बड़े पत्थर तैर रहे थे वही एक छोटा कंकड़ क्यों डूब गया?

© JGI Schools 2019

मेरे अनुसार पूरी वानर सेना को इस बात पर अटूट विश्वास था की पत्थरों पर श्री रामचंद्र जी का नाम मात्र लिख देने से वे तैर जाएंगी। किंतु वह छोटा कंकड़ सिर्फ इसीलिए डूब गया क्योंकि श्री रामचंद्र को स्वयं पर विश्वास नहीं था।

और यही हमारे जीवन में अक्सर होता है । जब हम किसी भी कार्य को पूरी श्रद्धा या पूरे विश्वास के साथ नहीं कर पाते हैं उसमें हमें कभी भी सफलता नहीं मिलती, किंतु जब वही काम हम पूरे आत्मविश्वास के साथ करते हैं तो उस काम को पूरा होने से कोई भी नहीं रोक सकता ।

© JGI Schools 2019

AUTHOR PROFILE

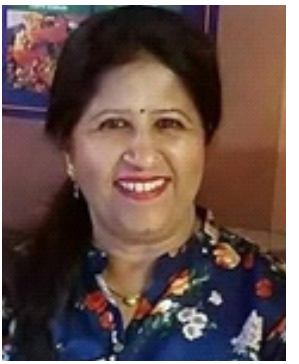

Ms. ASHA SHARMA
ACADEMIC CO-ORDINATOR

"The Hopeful Being- Meri Nazar Se"
Link: thehopefulbeing.blogspot.com

Regular writer story for Google's "Pratilipi"

© JGI Schools 2019

Story 45

महत्त्वाकांक्षाए

एक लड़की थी रमा। वह बहुत ही महत्त्वाकांक्षी थी और सदा सोचती थी कक मैं बहुत ऊंचाइयों को छूलू। हर चीज में मैं आगे रहूां। अच्छे काम करां।अपने मां-बाप को जरा भी परेशानी ना होने दूां, ऐसा जीवन वो जीना चाहती थी। रमा का पररवार भी एक अच्छा पररवार था। काफी हरा-भरा बबजनेस था उनका, लेककन बपता अक्सर घर से बाहर रहा करते थे। बाहर जाकर बबजनेस ककया करते थे। दूसरे शहरों में जाकर रमा अपने भाई के साथ,अपनी मां के साथ रहा करती थी। पढाई करना उसे अच्छा लगता था। मां पढी-ललखी नहीं थी, लेककन वह अपने बच्चों को बहुत ही सलीके से पाल रही थी। रमा की मां भी सुलझी हुई औरत थी। अपने बच्चों को सदा अच्छी आदतें देने का प्रयास करती थी। सांस्कारी बनाने की कोलशश में लगी रहती थी। इस तरह से उनका जीवन बहुत ही अच्छे से चल रहा था। पैसे की कोई कमी नहीं थी। बपता का अपना व्यवसाय था जो अच्छी तरह से फल फूल रहा था। कमी थी तो केवल बपता के प्यार की, क्योंकक वह अक्सर घर से बाहर ही रहा करते थे। बच्चों के ललए और उसका भाई , दोनों के ललए रमा मां का और बपता, दोनों का ही रोल अदा करती थी। बपता के आने पर वह बहुत आनांकदत होते थे,परांतु वह आनांद कुछ समय का ही होता था। धीरे-धीरे रमा और उसका भाई बड़े होने लगे, जरुरते बढने लगी और अच्छे पैसों वाला पररवार ऐसी स्स्थलत में आ गया जब उसके बपता का बबजनेस पूरी तरह से ठप हो गया । वह वापस घर में आ गए। जब वह घर आए उनकी स्स्थलत बहुत ही खराब थी। पैसों की कमी थी। रमा तब तक समझदार हो चुकी थी। वह चाहती थी ककसी तरह से अपने मां-बाप का सहारा बने। लेककन घर की आलथिक स्स्थलत इतनी खराब हो गई थी। मां भी पढी-ललखी नहीं थी, बपता भी व्यवसाय खत्म होने की वजह से अक्सर बीमार रहने लगे थे।

ऐसी नौबत आ गई कक ट्वेल्थ की फीस जमा करना भी उनके ललए मुस्ककल हो गया। कफर उसने कुछ ट्युशने शुर की। एक पररवार जो उनको अच्छे से जानता था, उन्होंने उसकी स्कूल की फीस अदा की। इस तरह से वह पढाई में अपने एररया में सबसे अच्छे नांबरों से पास हुई और उसे अच्छे कॉलेज में दास्खला भी लमल गया। तब तक उसके बपता भी कुछ काम करने लगे। धीरे-धीरे घर की आलथिक स्स्थलत ठीक तो हो रही थी पर बपता की बीमारी इतनी बढ गई कक अचानक एक कदन उनका देहांत हो गया। रमा अपनी पढाई भी करती थी और साथ में वह मां और बेटी, दोनों लमलकर कुछ ना कुछ काम कर लेते थे। स्जसकी वजह से चार पैसे आने लगे। रामा जैसे ही अच्छे कॉलेज से पास हुई, एक दोस्त की मदद से, एक नौकरी ले ली। इस तरह से उसने अपने दोनों भाइयों को अच्छे से पढाया ललखाया।

© JGI Schools 2019

उनको कभी यह कमी महसूस नहीं होने दी कक उनके बपता नहीं है। मां की आांख में एक बूांद पानी नहीं आने कदया कक उनका पलत नहीं है।

एक बेटी होने के बावजूद उसने घर के सारे फजि अदा ककए। रमा अपने पररवार के ललए एक मजबूत स्तांभ थी। उसने कभी जीवन में हार नहीं मानी ना कभी मां को इस बात का एहसास होने कदया कक वह अकेली है। बेटी नहीं उसने बेटा होने का फजि अदा ककया। बेकटयां कभी ककसी से कम नहीं होती है। जररत पड़ने पर वह अपनी मां बाप के ललए,अपने पररवार के ललए कुछ भी करने को तैयार हो जाती हैं। पररवार के ललए कहम्मत बनती हैं। वही रमा ने ककया और अपने दोनों भाइयों की शादी करवाई कफर उसकी शादी भी एक अच्छे घर में हो गई। उसके बावजूद भी वह अपनी मां का पूरा ध्यान रखती थी। अपने भाइयों को,अपने बेटों के समान पाल कर उसने बड़ा ककया।

© JGI Schools 2019

Story 46

बरगद की छांव

हमारे बडे बुजुर्ग सब के लिए एक समान प्यार दिखाते हैं ।चाहे कोई अपना हो या पराया । दकसी को भी मुसीबत में देखकर मदद गे के लिए आगे आ जाते हैं ।इसलिए इनका हमारी जिंदगी में होना का एक बहुत ही सुखि अनुभव है । जब तक यह बुजुर्ग हमारी जिंदगी में होते हैं तब तक हमें अपने कष्ट बहुत कम लगते हैं। क्योंदक हमें पता होता है कि कहीं ना कहीं से ये हमारी जिंदगी में आएगे और हमें अपना आशीर्वाद देंगे।

ऐसे ही एक सुखिद अनुभव मेरे साथ भी हुआ। मैं अपने ऑदिस प्रलतदिन एक ही रास्ते से जाया करती थी। बस स्टॉप से बस में चिी जाया करती थी । बस स्टॉप के पीछे एक घर था ।जिसमें एक बुजुर्ग मदहिा अकेलि रहा करती थी । मैंने उन्हें अक्सर अकेले किचन में काम करते हुए देखा था क्योंकि वहां बाहर से सब कुछ दिखता था। कभी उन्हें बाहर अपने आंगन में पेड पौधों को पानी देते हुए देखा। कभी आंगन में बैठकर सब्जी काटते हुए देखा बस मेरा इतना ही उनसे ररश्ता था। मैं अक्सर उनको आते जाते देखा करती थी। मुझे बहुत अच्छा लगता था। उनको देखकर एक अंजाने से रिश्ते का अहसास होता था। मुझे नहीं पता एक दिन की बात है। जब मैं घर से निकली तब बारिश नहीं हो रही थी, पर थोडी ही देर में अचानक तेज बारिश होने लगी थी। बस के आने का समय हो चुका था। मैं सोच रही थी दक क्या करां? तभी वह बुजुर्ग मदहिा घर से बाहर आई और छाता

© JGI Schools 2019

लाकर मुझे दिया। मुझे देखते हुए बोली कि यह लो बेटा , तुम छाता ले लो बारिश तेज हो रही है। उनकी आांखों में, जो अपनापन था वह मुझे बहुत ही स्नेहमय लगा । उनके चेहरे पर एक खुशी की झिक रही थी। मैंने छाता ले लिया और अपने को बारिश से बचाने लगी। मैंने उन्हें कहा चलो, मैं आपको घर तक छोड देती हूं। उन्होंने कहा, ''नहीं बेटा मेरा घर तो सामने ही है और तुम्हारी बस किसी भी वक्त आ सकती है । मैं अगर थोडी गीली भी हो गई तो मैं अपने वस्त्र बदल सकती हूं क्योंकि मैं तो घर में ही हुँ। लेकिन यदि तुम भीग गई तो तूम्हारी तबीयत खराब हो सकती है । इसलिए अपना ध्यान रखो बारिश से अपने को बचाओ।'' इतना कहते हुए वह जाने लगी। तभी मैंने उन्हें कहा कि मैं आपको यह छाता आज शाम को आकर वापस कर दूंगी । उन्होंने कहा कि , '' बेटा जब तुम्हें समय मिले तब आकर मूझे छाता दे देना । ऐसी कोई बात नहीं है और क्या अगर तूम नहीं भी दोगी तो क्या एक मां अपनी बेटी को छाता भी नहीं दे सकती । '' उनके शब्द मेरे कानो में हमेशा गुंजते रहते हैं। वह मुझे एक ममतामई मां के समान उस समय दिखाई पड़ी। ऐसे होते हैं बुजूर्ग जो हमें बरगद की छाया के समान तेज आंधी , पानी से बचाते है ।

मैं नमन करती हूं उन बुजूर्गों को और सब से यही आशा करती हूं कि सभी उनका सदा सम्मान करें।

© JGI Schools 2019